हम इतिहास क्यों पढ़ते हैं?
पीटर एन. स्टर्न्स

लोग वर्तमान में जीते हैं। वे भविष्य के लिए योजनाएँ बनाते हैं और उसके प्रति चिन्तित भी रहते हैं। जबकि इतिहास के अन्तर्गत बीते हुए समय के बारे में अध्ययन किया जाता है। वर्तमान की परेशानियों से जूझते हुए एवं भविष्य के प्रति आशंकित रहते हुए जो बीत गया उसके लिए परेशान क्यों हों? ज्ञान की समस्त वांछनीय एवं उपलब्ध शाखाओं के होते हुए क्यों इतिहास की पढ़ाई पर इतना जोर दिया जाए— जैसा कि अधिकतर अमरीकी शैक्षिक कार्यक्रमों में दिया जाता है। बहुत से विद्यार्थियों को इतिहास की पढ़ाई की जितनी जरूरत है उससे ज्यादा अध्ययन करने का आग्रह क्यों किया जाए?

किसी भी विषय का अध्ययन उसके औचित्य को समझने की माँग करता है। विषय के जानकारों के लिए यह समझाना आवश्यक है कि वह विषय ध्यान देने योग्य क्यों है। सबसे व्यापक रूप से स्वीकृत विषय कुछ लोगों को अपनी जानकारियों एवं सोच के तरीकों की वजह से आकर्षित करते हैं; निश्चय ही, इतिहास भी इनमें से एक विषय है। जो लोग इस विषय की ओर सहज ही आकर्षित नहीं होते और यह मानते हैं कि इसके बारे में जानने की परेशानी उठाने की क्या जरूरत है, उन्हें इसका उद्देश्य जानने की आवश्यकता है।

इतिहासकार हृदय प्रत्यारोपण नहीं करते, राजमार्ग डिजाइन में सुधार नहीं करते, ना ही अपराधियों को गिरफ्तार करते हैं। ऐसे समाज में, जो शिक्षा से उचित ही यह अपेक्षा करता है कि वह सार्थक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होगी, इंजीनियरिंग एवं चिकित्सा के कार्यों को परिभाषित करने के बजाय इतिहास के कार्यों को परिभाषित करना अधिक कठिन लग सकता है। इतिहास बहुत उपयोगी है, वस्तुतः अपरिहार्य है लेकिन ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी से उपलब्ध ज्ञान दूसरे विषयों के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान की तुलना में कम मूर्त और अकसर कम तात्कालिक होते हैं।

अतीत में इतिहास के औचित्य को जिन कारणों से उचित ठहराया गया उन्हें हम अब स्वीकार नहीं कर सकते। उदाहरणस्वरूप, वर्तमान शिक्षा में इतिहास का महत्त्व इसलिए है क्योंकि पहले के नेतृत्वकर्ताओं का मानना था कि कुछ ऐतिहासिक तथ्यों का ज्ञान शिक्षित–अशिक्षित के अन्तर को बताता है। उस व्यक्ति को दूसरों से बेहतर समझा जाता था जो इंग्लैण्ड पर नॉर्मन विजय (1066) की तिथि के बारे में बता दे, अथवा जिसने डार्विन के समकालीन ही विकास के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया उस व्यक्ति (वॉलेस) का नाम बता दे। ऐसे व्यक्ति को किसी लॉ स्कूल अथवा व्यापारिक उन्नति के लिए बेहतर उम्मीदवार माना जाता था। ऐतिहासिक तथ्यों का ज्ञान, चीन से लेकर संयुक्त राष्ट्र अमरीका तक, बहुत से समाजों में एक छलनी (screening tool) के रूप में इस्तेमाल होता है। यह आदत कुछ हद तक अब भी बरकरार है। दुर्भाग्य से, इतिहास का यह प्रयोग विचारहीन रटन्त प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है, जो एक विषय के रूप में इतिहास का वास्तविक पहलू तो है परन्तु बहुत आकर्षक नहीं है। इतिहास का अध्ययन किया जाना चाहिए क्योंकि यह व्यक्ति और समाज के लिए आवश्यक है, और यह सौंदर्य का संश्रय करता है। इस विषय के वास्तविक कार्यों पर चर्चा करने के कई तरीके हैं— क्योंकि इतिहास के कई गुणधर्म हैं। साथ ही इतिहास का अर्थ ग्रहण करने के बहुत से तरीके भी हैं। हालाँकि, इतिहास की उपयोगिता की समस्त परिभाषाएँ दो बुनियादी तथ्यों पर निर्भर करती हैं।

इतिहास लोगों और समाजों को समझने में हमारी मदद करता है

सर्वप्रथम इतिहास लोगों और समाजों के व्यवहार के बारे में सूचनाओं का भण्डार प्रदान करता है। लोगों और समाजों की कार्यप्रणाली को समझना कठिन है, हालाँकि बहुत सारे विषयों के अन्तर्गत इसे समझने का प्रयास किया गया है। इसके लिए सिर्फ और सिर्फ वर्तमान की आधार–सामग्री [data] पर निर्भरता हमारे प्रयासों को नाहक ही बाधित करेगी। ऐसे वक्त में जबकि राष्ट्र में शान्ति छाई हो, हम ऐतिहासिक सामग्रियों का उपयोग किए बगैर युद्ध का मूल्यांकन कैसे कर सकते हैं? अतीत के बारे में जो भी हम जानते हैं उसका प्रयोग किए बगैर हम कैसे प्रतिभा को समझ सकते हैं, या तकनीकी आविष्कारों के प्रभाव के बारे में जान सकते हैं, अथवा पारिवारिक जीवन को आकार देने में मान्यताओं/विश्वासों की भूमिका का पता लगा सकते हैं? कुछ समाजविज्ञानी मानव व्यवहार के लिए नियम या सिद्धान्त प्रतिपादित करने का प्रयास करते हैं। यह उपाय भी ऐतिहासिक सूचनाओं पर निर्भर होते हैं। इनमें कुछ अपवाद हैं, जो अकसर सीमित मात्रा एवं कृत्रिम परिस्थितियों में किए जाने वाले वे प्रयोग हैं जो यह समझने के लिए किए जाते हैं कि लोग व्यवहार कैसे करते हैं? समाज के संचालन के प्रमुख पहलुओं, जैसे कि बड़े पैमाने पर होने वाले चुनाव, मिशनरी गतिविधियों या सैन्य गठबन्धनों को सटीक प्रयोगों के रूप में स्थापित नहीं किया जा सकता। अतः, त्रुटिपूर्ण ढंग से ही सही, इतिहास को हमारी प्रयोगशाला के रूप में कार्य करना चाहिए और अतीत की आधार–सामग्री [data] को इस प्रयोगशाला के सबसे महत्त्वपूर्ण साक्ष्य के रूप में प्रयोग करना चाहिए, इस अनिवार्य खोज के लिए कि हमारी जटिल नस्ल सामाजिक परिस्थितियों में जैसा व्यवहार करती है, वह वैसा क्यों करती है? मूलतः, यही कारण है कि हम इतिहास से दूर नहीं रह सकते : इतिहास ही एकमात्र विषय है जो कि साक्ष्यों का व्यापक आधार प्रदान करता है जिससे कि समाज की कार्यप्रणाली के बारे में चिन्तन एवं विश्लेषण किया जा सके, और लोगों को भी अपना जीवन चलाने के लिए इस बात की समझ होनी चाहिए कि समाज कार्य कैसे करते हैं?

इतिहास परिवर्तन को और जिस समाज में हम रहते हैं उसके अस्तित्व में आने की प्रक्रिया को समझने में हमारी मदद करता है

इतिहास के एक अनिवार्य रूप से गम्भीर अध्ययन का विषय होने का दूसरा कारण, प्रथम कारण का निकटता से अनुसरण करता है। अतीत, वर्तमान के होने का, और इस तरह भविष्य का भी कारण होता है। जब कभी हम किसी घटना की पृष्ठभूमि को जानने की कोशिश करते हैं तो हमें अतीत में झाँकना ही होगा; उदाहरणस्वरूप, चाहे वह अमरीकी काँग्रेस में राजनीतिक दल के दबदबे में बदलाव की बात हो, किशोर आत्महत्या की दर में बड़ा परिवर्तन हो या बाल्कन अथवा मध्यपूर्व में युद्ध हो। कभी-कभी समसामयिक घटनाक्रम भी एक प्रमुख विकास की व्याख्या करने के लिए पर्याप्त होता है लेकिन अधिकतर बदलाव के कारणों की पहचान करने के लिए हम सुदूर अतीत में देखने को बाध्य होते हैं। केवल इतिहास के अध्ययन से ही हम समझ सकते हैं कि चीजें कैसे बदलती हैं; इतिहास ही वह विषय है जिसकी सहायता से हम परिवर्तन के कारणों को समझने की शुरुआत कर सकते हैं; और इतिहास से ही हम समझ सकते हैं कि किसी संस्था अथवा समाज के कौन से तत्त्व परिवर्तन के बावजूद अस्तित्व में बने रहते हैं।

हमारे जीवन में इतिहास का महत्त्व

हमारे जीवन में इतिहास के अधिक विशिष्ट एवं वैविध्यपूर्ण उपयोगों के यह दो बुनियादी कारण हैं। अच्छी तरह से वर्णित इतिहास सुन्दर होता है। ऐसे अधिकांश इतिहासकार, जिन्हें आम पाठक ज्यादा पसन्द करते हैं, लेखन में कौशल एवं नाटकीयता के साथ–साथ तथ्यों की प्रामाणिकता के महत्त्व को भी जानते हैं। जीवनी और सैन्य इतिहास, कुछ तो अपने में निहित विशिष्ट कहानियों की वजह से भी आकर्षित करते हैं। कला एवं मनोरंजन की दृष्टि से इतिहास न केवल सौन्दर्यबोध बल्कि मानव समझ के स्तर पर भी एक वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति करता है। बखूबी कही गई कहानियाँ वे हैं जो लोगों और समाजों की कार्यप्रणाली को उद्घाटित करती हैं, और विभिन्न काल एवं स्थानों के मानवीय अनुभवों के बारे में विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं। यही सौन्दर्यात्मक एवं मानवतावादी लक्ष्य बहुत ही दूरस्थ अतीत के पुनर्निर्माण के प्रयासों में रत हो जाने के लिए लोगों को प्रेरित करते हैं; ऐसा अतीत जिसकी वर्तमान में कोई तात्कालिक उपयोगिता नहीं है। सुदूर अतीत में लोगों द्वारा अपनाए गए जीवन का निर्माण करने के तरीकों के बारे में अन्वेषण करना— जिसे इतिहासकर कभी-कभी 'अतीत की अतीतात्मकता' (pastness of the past) भी कहते हैं —अपने आप में बहुत सुन्दर एवं उत्साहजनक होता है। यही नहीं, इसमें मनुष्य एवं समाज को जानने का एक दूसरा दृष्टिकोण भी अन्तर्निहित होता है।

इतिहास नैतिक समझ को समृद्ध करता है

इतिहास, नैतिक चिन्तन के लिए आधारभूमि भी उपलब्ध कराता है। ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं घटनाओं की कहानियाँ पढ़ने से इतिहास के विद्यार्थियों को अपनी नैतिक समझ को परखने का मौका मिलता है। यही नहीं, लोगों ने कठिन परिस्थितियों में जिन वास्तविक जटिलताओं का सामना किया है, उसके परिप्रेक्ष्य में भी उन्हें अपनी नैतिक समझ को प्रखर करने का अवसर मिलता है। ऐसे लोग प्रेरणास्रोत का काम करते हैं, जिन्होंने न केवल कथा–कहानियों में बल्कि वास्तविक ऐतिहासिक स्थितियों में भी विपरीत हालात में विजय पाई। "उदाहरण द्वारा इतिहास का शिक्षण" एक ऐसी ही उक्ति है जो इतिहास के अध्ययन के इस उपयोग को दर्शाती है। यह न सिर्फ प्रामाणिक नायकों और उन महान पुरुषों एवं महिलाओं की गाथाओं का अध्ययन है जिन्होंने सफलतापूर्वक नैतिक दुविधाओं का सामना किया, बल्कि यह उन सामान्य जनों की गाथाओं का भी अध्ययन है जो साहस, लगन एवं रचनात्मक विरोध की सीख देते हैं।

इतिहास पहचान प्रदान करता है

इतिहास पहचान कायम करने में भी मदद करता है, यह अन्य कारणों में निस्सन्देह एक वजह है कि सभी आधुनिक देश किसी न किसी रूप में इसके शिक्षण को प्रोत्साहित करते हैं। ऐतिहासिक आधार–सामग्री [historical data] के अन्तर्गत वे सभी साक्ष्य आते हैं जो बताते हैं कि कैसे परिवारों, समूहों, संस्थाओं और देशों का निर्माण हुआ और कैसे वे अपनी एकजुटता बरकरार रखते हुए विकसित हुए। बहुत से अमरीकी नागरिकों के लिए अपने पारिवारिक इतिहास का अध्ययन ही इतिहास का सबसे उपयुक्त इस्तेमाल है क्योंकि यह स्पष्ट तौर पर वंशावली सम्बन्धी तथ्य तथा थोड़े जटिल स्तर पर इस समझ का आधार प्रदान करता है कि वृहद ऐतिहासिक बदलावों के साथ उनके परिवार ने कैसे अन्तःक्रिया की। इस प्रकार इतिहास के माध्यम से पारिवारिक पहचान स्थापित एवं सुदृढ़ की जाती है। अमरीका में बहुत सारी संस्थाएँ, व्यवसाय, समुदाय और सामाजिक इकाइयाँ, जैसे कि जातीय समूह, इतिहास का उपयोग इसी तरह पहचान स्थापित करने के लिए करते हैं। अतः स्पष्ट है कि एक समृद्ध अतीत के आधार पर पहचान स्थापित करने की सम्भावना के समक्ष केवल वर्तमान आधारित पहचान की परिभाषा फीकी पड़ जाती है। निश्चिय ही,

राष्ट्र इस तरह के पहचान आधारित इतिहास का उपयोग एवं दुरुपयोग दोनों ही करते हैं। ऐसे इतिहास, जो राष्ट्रीय अनुभवों की कुछ खास विशेषताओं पर बल देते हुए राष्ट्र की कथा कहते हैं, उनका निहितार्थ ही राष्ट्रीय मूल्यों की समझ एवं राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता का विकास करना होता है।

इतिहास का अध्ययन अच्छी नागरिकता के लिए अनिवार्य है

इतिहास का अध्ययन अच्छी नागरिकता के लिए अनिवार्य है। विद्यालयी पाठ्यचर्याओं में इतिहास के स्थान को सामान्यतया इसी आधार पर उचित ठहराया जाता है। कभी-कभी नागरिकता के इतिहास के पैरोकार व्यक्तिगत सफलता एवं नैतिकता की भ्रामक छवियाँ उभारती कहानियों और पाठों से रोचक बनाए गए इतिहास के माध्यम से राष्ट्रीय पहचान एवं नैतिकता को प्रोत्साहित करने की आशा रखते हैं। लेकिन नागरिकता के लिए इतिहास का महत्त्व इस संकीर्ण उद्देश्य से कहीं अधिक है और किन्हीं बिन्दुओं पर इतिहास इस उद्देश्य को चुनौती भी दे सकता है।

वह इतिहास जो वास्तविक नागरिकता के लिए आधार तैयार करता है, एक अर्थ में अतीत के अध्ययन के आवश्यक उपयोग की तरफ ही जाता है। इतिहास राष्ट्रीय संस्थाओं, समस्याओं एवं मूल्यों के उभरने की आधार–सामग्री उपलब्ध कराता है— इस तरह की उपलब्ध आधार–सामग्री का यह एकमात्र विशिष्ट भण्डार है। इतिहास इस बात का सबूत भी देता है कि कैसे राष्ट्रों ने दूसरे समाजों के साथ अन्तःक्रिया की, जिससे ऐसे अन्तरराष्ट्रीय व तुलनात्मक दृष्टिकोण प्राप्त होते हैं जो जिम्मेदार नागरिकता के लिए आवश्यक हैं। यही नहीं, इतिहास का अध्ययन यह समझने में हमारी मदद करता है कि कैसे हाल के, सामयिक एवं भावी परिवर्तन, जो नागरिकों के जीवन को प्रभावित करते हैं— उभर रहे हैं अथवा उभरेंगे और उनके उभरने के कारण क्या हैं। इससे भी महत्त्वपूर्ण यह है कि इतिहास का अध्ययन चिन्तनशील मस्तिष्क के ऐसे आदतन व्यवहारों [habits of mind] को प्रोत्साहित करता है जो जिम्मेदार सामाजिक व्यवहार के लिए अनिवार्य हैं— चाहे वह राष्ट्रीय या सामाजिक नेता के रूप में हो, एक जागरूक मतदाता हो, एक याचिकाकर्ता अथवा एक सामान्य पर्यवेक्षक हो।

इतिहास का एक छात्र किन कौशलों का विकास करता है?

इतिहास का अच्छी तरह से प्रशिक्षित छात्र, जिसने अतीत की सामग्रियों के साथ काम करने एवं सामाजिक परिवर्तनों के मामलों का अध्ययन [case studies] करने की शिक्षा पाई है— यह कार्य करने की प्रक्रिया जानने के लिए क्या करता है अर्थात उसे अपने अन्दर किन कौशलों का विकास करना पड़ता है? अवश्य ही उन कौशलों की सूची बनाई जा सकती है, परन्तु इस सूची में एक दूसरे से जुड़ी कई श्रेणियाँ रहती हैं।

साक्ष्यों का आकलन करने की योग्यता : इतिहास का अध्ययन करने से विभिन्न प्रकार के साक्ष्यों के साथ काम करने एवं उनका अध्ययन करने का अनुभव होता है— ऐसे साक्ष्य जिनका उपयोग इतिहासकार जहाँ तक सम्भव हो सके, अतीत की एक सटीक तस्वीर बनाने के लिए करते हैं। यह सीखने से कि अतीत के राजनेताओं के कथनों (यह भी एक प्रकार के साक्ष्य हैं) की व्याख्या कैसे करनी है, वर्तमान के नेताओं द्वारा दिए गए बयानों में से निष्पक्ष एवं स्वहितपोषी बयानों में अन्तर करने की क्षमता का विकास होता है। यह सीखना कि कैसे विभिन्न प्रकार के साक्ष्यों— सार्वजनिक वक्तव्यों, निजी रिकॉर्ड, संख्यात्मक आँकड़े, दृश्यात्मक सामग्री —का संयोजन किया जाए, विविध प्रकार की आधार–सामग्री [data] पर आधारित

सुसंगत तर्कों को प्रस्तुत करने की क्षमता को विकसित करता है। इस कौशल का उपयोग रोजमर्रा की जिन्दगी में आने वाली सूचनाओं की व्याख्या करने के लिए भी किया जा सकता है।

परस्पर विरोधी व्याख्याओं का आकलन करने की क्षमता : इतिहास के अध्ययन का अर्थ है ऐसे कौशल ग्रहण करना जिनकी सहायता से विविध एवं अधिकतर परस्पर विरोधी व्याख्याओं को व्यवस्थित रूप में समझा जा सके। ऐतिहासिक अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य समाज की कार्यप्रणाली को समझना है जो कि स्वाभाविक रूप से बहुत ही अस्पष्ट है और यही बात, वर्तमान में जो चल रहा है, उसे समझने पर भी लागू होती है। यह सीख कि कैसे परस्पर विरोधी व्याख्याओं की पहचान की जाए एवं उनका मूल्यांकन किया जाए, नागरिकता का एक आवश्यक कौशल है। इस कौशल के विकास के लिए इतिहास मानव अनुभव की प्रयोगशाला के रूप में बहुधा बहस का मुद्दा होते हुए भी प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें कभी-कभी ऐतिहासिक अध्ययन के समस्त फायदे अतीत का उपयोग पहचान बनाने के लिए करने के संकीर्ण उद्देश्यों से टकरा जाते हैं। अतीत के घटनाक्रमों को परखने का अनुभव एक ऐसा रचनात्मक रूप से विवेचनात्मक बोध प्रदान करता है जिसका उपयोग राष्ट्रीय या सामूहिक पहचान के गौरव के पक्षपातपूर्ण दावों को परखने के लिए भी किया जा सकता है। इतिहास का अध्ययन किसी भी रूप में निष्ठा एवं प्रतिबद्धता को नजरन्दाज नहीं करता लेकिन अवश्य ही यह तर्कों का आकलन करने की जरूरत पर ध्यान केन्द्रित करता है और यह अवसर प्रदान करता है कि बहसों में हिस्सा लिया जा सके और एक सुसंगत दृष्टिकोण हासिल किया जा सके।

परिवर्तनों के पिछले उदाहरणों का आकलन करने का अनुभव : आज के सामाजिक परिवर्तनों को समझने के लिए परिवर्तन के पिछले उदाहरणों का आकलन करने का अनुभव बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। हमारी "सतत परिवर्तनशील दुनिया" को समझने के लिए यह एक अनिवार्य कौशल है। परिवर्तन के विश्लेषण का अर्थ है ऐसी क्षमता का विकास करना जिसकी सहायता से परिवर्तन की व्यापकता एवं महत्त्व को निर्धारित किया जा सके क्योंकि कुछ परिवर्तन दूसरों के मुकाबले अधिक मूलभूत होते हैं। अतीत के प्रासंगिक उदाहरण लेकर किन्हीं खास परिवर्तनों की तुलना करने से इतिहास के विद्यार्थियों को इस क्षमता का विकास करने में मदद मिलती है। बहुत ही नाटकीय परिवर्तनों के दौरान भी बने रहने वाली निरन्तरता को पहचानने की योग्यता एवं परिवर्तन के सम्भावित कारणों को निर्धारित करने का कौशल, दोनों इतिहास के अध्ययन से ही विकसित होते हैं। इतिहास का अध्ययन यह समझने में भी मदद करता है कि कोई एक कारक— जैसे कि तकनीकी आविष्कार या फिर सोची समझी कोई नई नीति —किसी परिवर्तन के लिए जिम्मेदार है अथवा जैसा कि सामान्यता होता है, बहुत सारे कारक मिलकर किसी वास्तविक परिवर्तन के अस्तित्व में आने का कारण बनते हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो ऐतिहासिक अध्ययन उस मायावी व्यक्ति को विकसित करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है जिसको हम एक जानकार, जिम्मेदार नागरिक कहते हैं। यह हमारे राजनीतिक संस्थानों की पृष्ठभूमि के बारे में आधारभूत तथ्यात्मक सूचनाएँ उपलब्ध कराता है और उन मूल्यों और समस्याओं से भी अवगत कराता है जो हमारी सामाजिक सेहत को प्रभावित करती हैं। यह हमारी साक्ष्यों का उपयोग करने, व्याख्याओं का आकलन करने एवं परिवर्तन व निरन्तरता का विश्लेषण करने की क्षमता के विकास में भी योगदान देता है। कोई भी कभी वर्तमान के साथ उस तरह काम नहीं कर सकता जिस तरह इतिहासकार अतीत पर काम करते हैं। ऐसा कमाल करने के लिए हमारे पास दृष्टिकोण ही नहीं है। लेकिन

हम इस दिशा में अग्रसर हो सकते हैं यदि हम वर्तमान को समझने के लिए अपने चिन्तनशील मस्तिष्क के ऐतिहासिक आदतन व्यवहार [historical habits of mind] का प्रयोग करें। इस प्रकार हम इस पूरी प्रक्रिया में बेहतर नागरिकों की तरह कार्य कर पाएँगे।

कार्यक्षेत्र की दुनिया में इतिहास बहुत उपयोगी है

इतिहास की जानकारी किसी कार्य को सम्पादित करने के लिए उपयोगी है। इसका अध्ययन अच्छे व्यवसायियों, पेशेवरों और राजनीतिक नेताओं को तैयार करने में मदद करता है। इतिहासकारों के लिए प्रकट तौर पर पेशेवर नौकरियाँ बहुत हैं लेकिन अधिकांश लोग जो इतिहास का अध्ययन करते हैं, वे पेशेवर इतिहासकार नहीं बनते। पेशेवर इतिहासकार विभिन्न स्तरों पर पढ़ाते हैं, संग्रहालयों एवं मीडिया केन्द्रों में काम करते हैं, व्यवसायों एवं सरकारी संस्थाओं के लिए ऐतिहासिक अनुसन्धान करते हैं या फिर उभरती हुए इतिहास–सम्बन्धी परामर्शदात्री संस्थाओं के काम में भाग लेते हैं। इतिहास के मूलभूत उद्यम को जीवित रखने के लिए यह सारे कार्य अथवा वर्ग बहुत महत्त्वपूर्ण, यहाँ तक कि अनिवार्य हैं। लेकिन अधिकतर लोग जो इतिहास का अध्ययन करते हैं वे अपने प्रशिक्षण का इस्तेमाल व्यापक पेशेवर उद्देश्यों के लिए करते हैं। इतिहास के विद्यार्थियों को अपना अनुभव रोजगार के विविध क्षेत्रों में बहुत उपयोगी एवं प्रासंगिक प्रतीत होता है। यही नहीं कानून एवं लोक प्रशासन के क्षेत्र में उनकी आगे की पढ़ाई में भी यह अनुभव बहुत प्रासंगिक होते हैं। अधिकतर नौकरी देने वाले, अकसर खास तौर पर ऐसे उम्मीदवारों (विद्यार्थियों) की तलाश करते हैं, जिनमें वे क्षमताएँ मिलती हैं जो इतिहास का अध्ययन करने वाले में अवश्य विकसित होती हैं। इसकी वजह जानना मुश्किल नहीं है : अतीत के विभिन्न चरणों और विभिन्न समाजों का अध्ययन करने के कारण इतिहास के विद्यार्थी एक व्यापक दृष्टिकोण हासिल कर लेते हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें अपने कार्यक्षेत्र में आने वाली कई परिस्थितियों का सामना करने में मदद करता है। यही नहीं, उनके व्यवहार एवं समझ को यही दृष्टिकोण लचीला तथा विस्तृत बनाए रखता है। इतिहास के विद्यार्थी मूलभूत रूप से अनुसंधान के कौशल विकसित करते हैं, यह सूचनाओं के स्रोत तलाशने एवं उनका मूल्यांकन करने की योग्यता तथा विविध व्याख्याओं को पहचानने एवं उनका मूल्यांकन करने के माध्यम भी ढूँढते हैं। इसके अलावा इतिहास के क्षेत्र में काम करने से आधारभूत लेखन एवं बोलने के कौशलों का भी विकास होता है, और यह प्रत्यक्ष रूप से सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों की बहुत–सी विश्लेषणात्मक जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत प्रासंगिक है; विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ रुझानों को पहचानने, आकलन करने और विवरण देने की क्षमता आवश्यक होती है। भले ही इतिहास का अध्ययन बाकी तकनीकी क्षेत्रों के मुकाबले, विद्यार्थियों को सीधे तौर पर किसी खास व्यवसाय के लिए तैयार नहीं करता, इसका अध्ययन अवश्य ही विभिन्न प्रकार के कार्यों एवं पेशेवर परिस्थितियों के लिए एक उपयोगी गुण है। रोजगार के क्षेत्र में प्रवेश पाने के पश्चात स्वयं को परिस्थितियों के अनुकूल ढालने एवं अपने कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए जो गुण चाहिएँ वे इतिहास का अध्ययन करने से ही विकसित होते हैं। अर्थात, इतिहास विद्यार्थियों को अपने कार्यक्षेत्र में लम्बी पारी खेलने के लिए तैयार करता है। इस बात से कोई इनकार नहीं है कि हमारे समाज में बहुत से लोग इतिहास के अध्ययन की तरफ आकर्षित तो हैं लेकिन इसकी प्रासंगिकता को लेकर चिन्तित रहते हैं। हमारी बदलती अर्थव्यवस्था में, अधिकांश क्षेत्रों में नौकरियों के भविष्य को लेकर चिन्ता है। अतः इतिहास का प्रशिक्षण विलास का विषय नहीं है। यह रोजगार के कई क्षेत्रों में सीधे तौर पर सहायक होता है और स्पष्ट रूप से हमारे कार्यक्षेत्र में हमारी मदद करता है।

इतिहास का अध्ययन क्यों करें?

उत्तर है— हमें इतिहास का अध्ययन करना ही होगा जिससे कि हम मानव अनुभवों की प्रयोगशाला तक पहुँच सकें। जब हम इतिहास का उचित प्रकार से अध्ययन करते हैं तो दिमाग कुछ उपयोगी आदतें [habits of mind] ग्रहण करता है। इसके साथ ही हम उन शक्तियों के बारे में कुछ आधारभूत तथ्य जान पाते हैं जो हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार हम एक जानकार, जिम्मेदार नागरिकता, आलोचनात्मक सोच एवं सामान्य जागरूकता के लिए प्रासंगिक कौशलों और विकसित क्षमताओं के साथ उभर कर आते हैं। इतिहास की उपयोगिता विभिन्न रूपों में है। इतिहास का अध्ययन हमें वस्तुतः, 'विक्रयशील' कौशल विकसित करने में मददगार हो सकता है, किन्तु इसको सिर्फ उपयोगितावाद के संकीर्ण दायरे में नहीं बाँधना चाहिए। कुछ इतिहास बचपन के बाद कार्य करने के लिए आवश्यक है— ऐसा इतिहास जो तात्कालिक वातावरण में परिवर्तन और निरन्तरता के बारे में व्यक्तिगत स्मृतियों से जुड़ा हो। कभी-कभी इतिहास व्यक्तिगत रुचि पर भी निर्भर करता है, जहाँ किसी को सुन्दरता आकर्षित करती है, किसी को कुछ खोज करने की खुशी मिलती है और कोई इसे एक बौद्धिक चुनौती के रूप में लेता है। इन दोनों ही चरम सीमाओं के बीच— अपरिहार्य न्यूनतम रुचि और गहरी प्रतिबद्धता के बीच —वह इतिहास आता है जो मानव जीवन के अतीत के खुलासों की व्याख्या करने के संचित कौशलों के माध्यम से इस बात की वास्तविक समझ प्रदान करता है कि यह दुनिया कैसे काम करती है।

•